Keynesian Theory of Employment

1936 ई. में J.M. Keynes ने अपनी पुस्तक "General theory of Employment Interest and Money" को प्रकाशित किया जिसे Keynesian Revolution कहा जाता है। इस पुस्तक में इन्होंने प्रभावपूर्ण माँग "Effective Demand" की धारणा को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। Keynes ने स्वयं अपनी पुस्तक में लिखा कि classical Economist Ricardo ने "Aggregate Demand function" की धारणा की पूर्णतः उपेक्षा किया। J. B. Say's law of market के अनुसार "Supply creates its own demand" इस नियम के अनुसार अर्थव्यवस्था में सभी समय माँग तथा पूर्ति में संतुलन रहेगा और कभी भी पूर्णरूप से over production की समस्या अर्थव्यवस्था में नहीं आयेगी। फलतः पूर्ण रोजगार की स्थिति सदा विद्यमान रहेगी। Classical Economist के विचार से Neo-classical economists Marshall, Pigou Edgeworth आदि पर इतना प्रबल प्रभाव पड़ा कि उन्होंने भी effective demand function की धारणा को नजरअंदाज किया। होला कि Malthus ने Ricardo के सिद्धान्त की कड़ी आलोचना कि किन्तु Aggregate Demand function को सैद्धान्तिक रूप देने में सफल नहीं हो सके। वे यह बताने में असमर्थ रहे कि क्यों और कैसे effective demand में कमी आयेगी।

1929-32 के महामंदी तथा बेरोजगारी ने

MONAF
PAGE NO.
DATE

अर्थशास्त्रियों के इस भ्रम को कि "अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति विद्यमान रहती है" तोड़ दिया ठीक इसी अवधि में Keynes ने अपनी इस पुस्तक के द्वारा प्रभावपूर्ण मांग के सिद्धान्त को स्पष्ट किया और ~~सर~~ बतलाया कि विनियोग तथा उपभोग का आय और रोजगार पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

Principle of Effective Demand :—

वस्तुतः प्रभावपूर्ण मांग का सिद्धान्त कीन्स के आय तथा रोजगार सिद्धान्त का प्रारम्भिक बिन्दु है। 'प्रभावपूर्ण मांग' से कीन्स का तात्पर्य है — "वह मांग जिसके पीछे क्रयशक्ति हो"। किन्तु कीन्स ने आय तथा रोजगार के सिद्धान्त के सम्बन्ध में "समस्त प्रभावपूर्ण मांग Aggregate effective demand" शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ है - किसी राष्ट्र या समुदाय की वह समस्त मांग जिसके पीछे क्रयशक्ति रहती है। कीन्स ने 'प्रभावपूर्ण मांग' शब्द का व्यवहार रोजगार के विविध स्तरों पर वस्तुओं एवं सेवाओं की समस्त मांग को व्यक्त करने के लिए किया है। रोजगार के विभिन्न स्तर समस्त मांग के विभिन्न स्तरों को प्रकट करते हैं किन्तु रोजगार का एक स्तर ऐसा भी होता है जहां समस्त मांग समस्त पूर्ति के समान हो। यही स्तर ही प्रभावपूर्ण मांग का बिन्दु होता है। कीन्स के अनुसार — 'The value of D (aggregate demand) at the point

T. Signature

Scanned with CamScanner

of aggregate demand function, where it is intersected by the aggregate supply function, will be called the effective demand."

अर्थात "समस्त ~~पूर्ति~~ मांग क्रिया को जिस बिन्दु पर समस्त पूर्ति क्रिया उसे काटती है उस बिन्दु पर समस्त मांग यानि D का मूल्य प्रभावपूर्ण मांग कहा जायेगा।"

अतः प्रभावी मांग रोजगार के विभिन्न स्तरों को निर्धारित करता है और आगे वह समस्त मांग कीमत तथा समस्त पूर्ति कीमत से निर्धारित होता है।

समस्त मांग कीमत Aggregate demand function.

समस्त मांग कीमत मुद्रा की वह मात्रा है जिसे सेवा नियुक्त व्यक्तियों द्वारा उत्पादित वस्तु को बेचकर उद्यमी प्राप्त करने की आशा करते हैं। रोजगार के विभिन्न स्तरों पर विभिन्न समस्त मांग को प्रकट करने वाली तालिका को समस्त मांग फलन या कीमत कहते हैं। समस्त मांग फलन रोजगार के स्तर का बढ़ता हुआ फलन है अतः

$D = f(N)$

D = वह आय है जिसे उद्यमी लोग N व्यक्तियों को सेवानियुक्त कर प्राप्त करने की आशा रखते हैं व सोचते हैं कि रोजगार के साथ मांग बढ़ेगा और आय बढ़ेगा अतः यह expected revenue है।

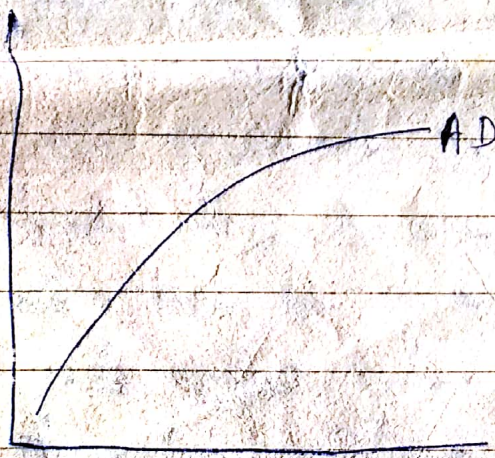

समस्त मांग वक्र बाएं से दाएं

T. Signature

ऊपर की ओर ढालू होता है क्योंकि रोजगार के स्तर के साथ समस्त मांग कीमत भी बढ़ती है और समस्त मांग कीमत के साथ प्रत्याशित आय बढ़ती है।

"समस्त पूर्ति कीमत Aggregate Supply function"
जब कोई उद्यमी श्रम की एक निश्चित मात्रा को सेवानियुक्त करता है तो उस कुछ निश्चित मात्रा में अन्य साधनों की भी जरूरत पड़ती है जैसे भूमि पूंजी कच्चा माल आदि जिनते श्रम के साथ पारिश्रमिक देना पड़ता है। इसप्रकार रोजगार के प्रत्येक स्तर पर उत्पादन की कुछ मुद्रा लागत भी शामिल रहती है जिसे पूरा करना उद्यमी के लिए आवश्यक होता है। अतः रोजगार के स्तर में वृद्धि के साथ साथ समस्त पूर्ति भी बढ़ती है (२० लाख श्रमिकों को रोजगार प्रदान करते है तो उन्हें उन श्रमिकों द्वारा उत्पादित वस्तु के विक्रय से २१५ करोड़ अवश्य मिलने चाहिए।) इसप्रकार यह Necessary Revenue होता है क्योंकि रोजगार और मांग में वृद्धि के साथ पूर्ति में वृद्धि होनी चाहिए।

$Z = \phi N$ (ϕ)

Z = समस्त पूर्ति कीमत
N = रोजगार

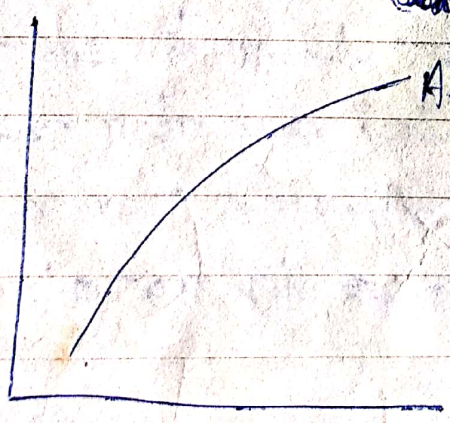

समस्त पूर्ति कीमत रेखा भी बायें से दायें ऊपर की ओर ढालू होता है। क्योंकि ज्यों ज्यों आवश्यक

T. Signature

Scanned with CamScanner

MONAF
PAGE NO
DATE

बिक्री बढ़ती है तथा त्यों सेवानियुक्त का स्तर भी बढ़ता है परन्तु जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार के स्तर पर पहुंच जाती है तो समस्त पूर्ति वक्र Vertical हो जाता है अतः पूर्ति कीमत में वृद्धि होने पर भी और अधिक रोजगार प्रदान करना संभव नहीं होता है क्योंकि यह पूर्ण रोजगार का स्तर होता है।

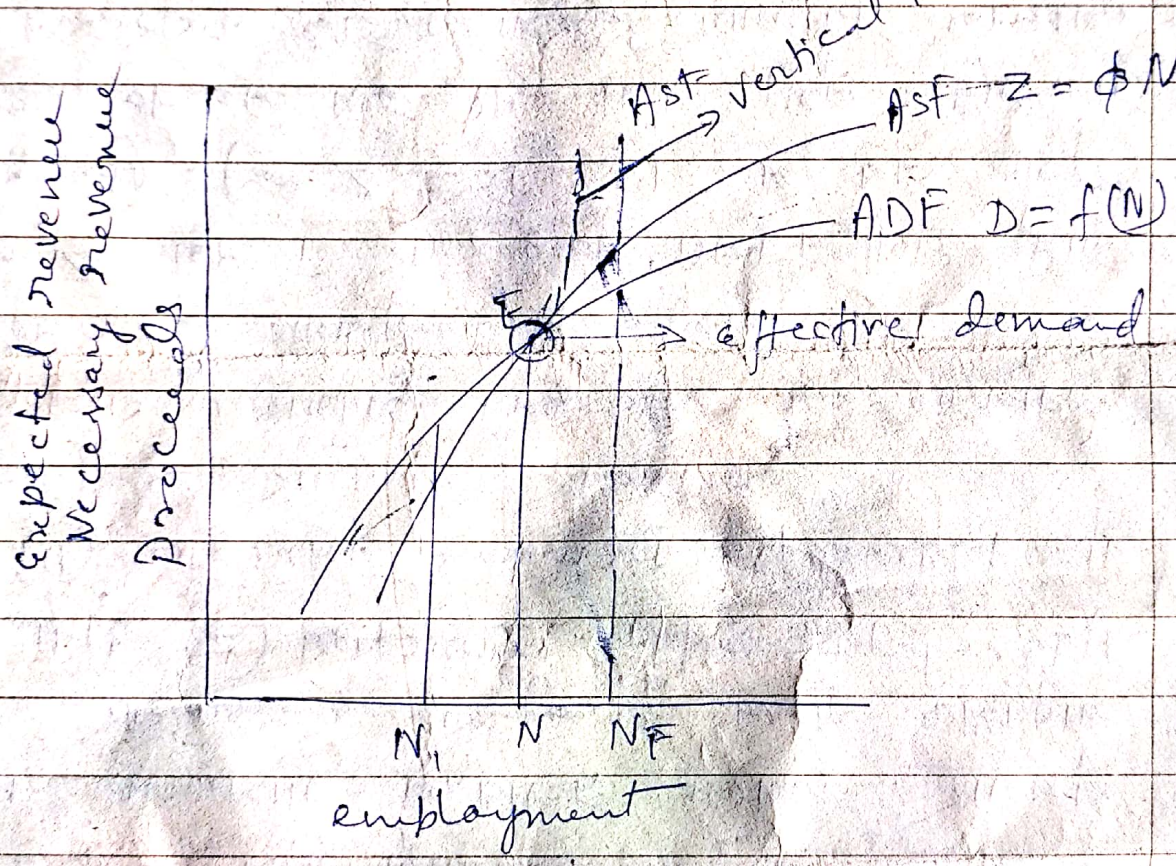

उपर के चित्र में N रोजगार का स्तर D प्रभावपूर्ण मांग है। ADF वह कुल प्राप्ती है जिसे प्राप्त होने की आशा सभी उद्यमी मिलकर अपने उत्पादन की बिक्री से करते है। ASF मुद्रा की वह राशि है जो उत्पादन की बिक्री से उद्यमियों को प्राप्त होनी चाहिए। अतः यह कुल उत्पादन

T. Signature

Scanned with CamScanner

लागत के बराबर होती है। इसप्रकार किसी अर्थव्यवस्था में ADF उद्यमियों की कुल प्राप्तियों (receipts) तथा ASF इनकी कुल लागतों (costs) का प्रतिनिधित्व करती है। किसी भी स्थिति में लागतों को प्राप्तियों से अधिक नहीं होना चाहिए।

कीन्स का कहना था कि यदि आगत D > Z की स्थिति अर्थव्यवस्था में होगी तो उद्यमी अधिक विनियोग करेगा जिसके फलस्वरूप रोजगार में वृद्धि होगी तथा यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक कि D = Z की स्थिति नहीं प्राप्त होगी। जिस बिन्दु पर D तथा Z एक दूसरे के बराबर होगी उस रोजगार के स्तर पर उद्यमियों को अधिकतम अनुमानित लाभ प्राप्त होगा।

इसप्रकार रोजगार के निर्धारण में Aggregate Demand function (D) तथा Aggregate Supply function (Z) दोनों का सापेक्षिक महत्व है। कीन्स के अनुसार पूर्ण रोजगार सदैव प्रभावपूर्ण मांग पर निर्भर करता है और प्रभावपूर्ण मांग आय के व्यय द्वारा निर्धारित होती है। बेरोजगारी प्रभावपूर्ण मांग के अभाव का परिणाम होती है। वास्तविक आय में वृद्धि के साथ-साथ उपभोग में भी वृद्धि होती है किन्तु इसमें कुल आय से कम ही वृद्धि होती है और कुछ समय के बाद स्थिर हो जाती है। अतः रोजगार में वृद्धि

T. Signature

Scanned with CamScanner

MONAF
PAGE NO.
DATE

तथा effective demand में वृद्धि के लिए विनियोग में वृद्धि आवश्यक हो जाता है। समृद्ध समाज में रोजगार में तब तक वृद्धि नहीं हो सकती जब तक कुल वास्तविक विनियोग में वृद्धि न हो। यह प्रभावपूर्ण मांग के सिद्धान्त का सार है जिसे कीन्स ने निम्न चार्ट से दिखाया

T. Signature

उपर्युक्त चार्ट से कीन्स ने बतलाया कि प्रभावपूर्ण मांग ASF तथा ADF पर निर्भर करती है चूंकि ASF अल्पकाल में स्थिर रहता है इसलिए अर्थव्यवस्था पर ADF का ही प्रभाव पड़ता है। ADF तीन तत्वों उपभोग, विनियोग तथा सरकारी खर्च पर निर्भर करती है। उपभोग भी आय के आकार एवं उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करती है इसलिए कुछ समय बाद उपभोग भी बहुत धीमी गति से बदलता है। सरकारी खर्च में वृद्धि तो अर्थव्यवस्था के ढांचे पर निर्भर करती है इसलिए अन्ततः प्रभावपूर्ण मांग विनियोग पर निर्भर करता है।

विनियोग की मात्रा MEC तथा Rate of interest पर निर्भर करती है अगर MEC ज्यादा होगा तो लोग अधिक विनियोग करेंगे और यदि rate of interest कम होगा तो लोग अधिक विनियोग करेंगे। MEC का निर्धारण भी Supply price तथा Prospective yield (भावी आय) के द्वारा होती है लेकिन पूर्ति कीमत भी स्थिर ही होता है और भावी आय (Prospective yield) पूंजी परिसम्पत्ति मनोवैज्ञानिक तत्वों पर निर्भर करता है जिसपर विनियोग बढ़ाने का भरोसा नहीं किया जा सकता है।

अतः ब्याज दर में कमी विनियोग पर आंशिक प्रभाव डालते है जो कि मुद्रा की

T. Signature

MONAF
PAGE NO.
DATE

पूर्ति और मुद्रा की मांग पर निर्भर करता है। मुद्रा की मांग तरलता अधिमान को बता करके तथा मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि मौद्रिक प्राधिकरण के द्वारा किया जा सकता है ताकि ब्याज की दर में कमी लाया जा सके। ब्याज की दर में कमी ही विनियोग को प्रोत्साहन देती है। और विनियोग से आय, आय से मांग तथा मांग से रोजगार प्रभावित होती है।

इसप्रकार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में रोजगार का स्तर प्रभावपूर्ण मांग पर निर्भर रहता है और प्रभावपूर्ण मांग मुख्यतः विनियोग पर निर्भर करता है। विनियोग में वृद्धि करके ही पूर्ण रोजगार की प्राप्ती की जा सकती है।

By, Dr Sandhya Rani
Deptt of Economics
Maharaja College
Paper – II

Scanned with CamScanner